सूक्ष्म अनुभव से चिरकालिक बदलाव

कितनी बड़ी जमात मनुष्यों की है! जमात में सभी दिन-रात अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हैं, लेकिन परेशान भी हैं। जब वो कभी रात में सोते हैं, थोड़ा-सा मन शांत होता है। लेकिन हर दिन यह सोचते ज़रूर हैं कि कल फिर उठकर क्या सारा करना पड़ेगा! या कुछ ऐसा हो जाये जिससे आराम से हम सबकुछ कर पायें। मेहनत न लगे, शरीर न थके, मानसिक रूप से हम विक्षिप्त न हों।

मनुष्य जीवन के पहलू में सबसे पहला पहलू आध्यात्मिक पहलू ही है जिसमें वो बचपन से ही बच्चे के समान ही जीवन जीता है। जब छोटा होता है, उसके अनुभव छोटे होते हैं। जब वो बड़ा होता जाता है तो भी अनुभव छोटे ही होते हैं। बस उसका शरीर बड़ा हो जाता है, अनुभव तो छोटे ही होते हैं। लेकिन बचपन से बड़े होने का जो सफर होता है उसमें अनुभव जुड़ते जाते हैं और हर दिन हम एक नया अनुभव करते हैं। समाज की इकाई के रूप में मनुष्य हर दिन कुछ नया सीखता है और सीख से भी कुछ सीख लेता है। लेकिन कुछ विकारिक भावनाओं के चंगुल में फंसने के कारण अच्छा सीखने के बावजूद भी गलतियां करता है। व्यक्ति को रियलाइज़ कब होता है, जिनके प्रति उसने अपने संकल्प और समय को खर्च किया, उनसे उसे कुछ ऐसा सुनने को मिल जाये, कुछ ऐसा देखने को मिल जाये तो उन आत्माओं के अंदर वैराग्य पैदा होता है कि मैंने इनके लिए इतना झूठ बोला, इतना कुछ किया, आज हमें समझ आ रहा है कि इनके साथ हमारा कर्म, हमारी सोच हमें परेशान कर रही है।

इसकी गहराई क्या है? व्यक्ति के कर्मों की सूक्ष्मता। जिस दिन उसे ये सूक्ष्म अनुभव होने लग जाये कि वो जो कर रहा है, भले वो निमित्त रूप से कर रहा है, भले वो सोचता है कि मैं दूसरों के लिए कर रहा हूँ, लेकिन हाथ, पाँव और संकल्प, सब उसके यूज़ हो रहे हैं। इसका सूक्ष्म प्रभाव भी उसके ऊपर ही पड़ रहा है। अगर चार तरह के लोग हैं और चारों के लिए मुझे कुछ करना है तो चारों के स्वभाव-संस्कार को ध्यान में रखते हुए हम कर्म करते हैं। उनको क्या अच्छा नहीं लगता, क्या पसंद है, उस अनुरूप हम कर्म करते हैं। तो आत्मा के दो पहलू दिखा दिये दुनिया में कि किसी को शांत रखने के लिए, किसी को खुश रखने के लिए, घर का वातावरण ठीक करने के लिए हम सभी कुछ न कुछ ऐसा करते हैं। दूसरा पहलू है कि चाहे कोई जैसा भी है लेकिन हमें कर्म सच्चाई के साथ ही करना है। उसमें हमें कभी बदलना नहीं है। कभी पलटना नहीं है। यही वो लोग होते हैं जो इतिहास रचते हैं। हर कोई अपने मन के अनुसार उनसे उम्मीद रखता है, लेकिन वे न्यूट्रल तरीके से कार्य करते हैं। जो सही है वही करना है। किसी के लिए, किसी की खुशी के लिए कोई कर्म हमारी शक्ति को बढ़ने नहीं देता। हम दिन-रात बंध-बंध के अपने आप को कमज़ोर महसूस करते हैं। इसीलिए आत्मा का जो दूसरा पहलू है, अगर उस अनुभव में, माना उसकी ओरिजनल क्वालिटी में, अर्थात् उसके अंदर किसी से भेदभाव करने का नेचर नहीं है, भेदभाव आत्मा को शोभता ही नहीं, उसके अंदर एक से नफ़रत एक से प्यार हो ही नहीं सकता। तो ये सूक्ष्मता अगर हमको समझ में आने लग जाये तो हम बदलाव को समीप ला सकते हैं। इसमें सबलोग दुहाई देने लगते हैं कि हमको परिवार की ज़िम्मेवारी मिली है, हमें परिवार को सम्भालना है तो हमको ऐसा करना पड़ेगा। तो परमात्मा हमको इसका बहुत सुंदर उत्तर देते हैं कि आप कर तो देंगे उनके लिए लेकिन उससे हमारे ऊपर एक लेयर चढ़ेगी विकार की, स्वार्थ की। तो आपके परमार्थ में निःस्वार्थ स्थिति तो रही नहीं। आपका कर्म हुआ ज़रूर, लेकिन बहुत ही गिरा हुआ, मोह वश। इसलिए एक दिन आप सभी बैठकर परमात्मा की याद में इन सब बातों को सोचें कि हम सूक्ष्म अनुभव के आधार से आत्मा को सिर्फ और सिर्फ सत्य की राह पर चलाये उन सभी बातों में शक्ति पैदा कर सकते हैं जहाँ नहीं है। ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा या हमारी निमित्त रूप से दादियों ने कभी भी दूसरों के आधार से अपने संकल्पों को नहीं बदला। अपने सूक्ष्म अनुभव के आधार से आत्मा को शक्तिशाली बनाया। हर आत्मा का भाग्य अपना-अपना है। समझ उसकी खुद की अपनी है, तो निश्चित रूप से इनको टाइम लगा लेकिन आत्मा की चमक इतनी बढ़ गयी कि कुछ आत्माओं की सच्चाई को, उनके वायब्रेशन्स को, उनकी धारणाओं को लोग सलाम कर रहे हैं, तसलीम कर रहे हैं। ये है सूक्ष्मता। जिस दिन आत्मा सिर्फ और सिर्फ जो है जैसी है, माना शुद्ध है, पवित्र है, सच्ची है, अगर वो याद रहता है तो उससे स्वर्गिक निर्माण में समय नहीं लग सकता। लेकिन इतने सारे हम परमात्मा के बच्चे, चाहे सूक्ष्म रूप से या स्थूल रूप से स्वार्थ वश कहीं न कहीं सबका मन उलझा हुआ है। इसलिए महापरिवर्तन का दृश्य देखना पूरी तरह से असंभव सा लग रहा है। तो इस परिवर्तन की बेला में समय को नज़दीक लाने के निमित्त हम तब बन सकते हैं जब अपने सूक्ष्म अनुभव को बार-बार याद दिलाकर कि हम ये हैं, ऐसे हैं, तो हमको ऐसा ही कर्म करना है चाहे दुनिया बदल जाये। तो फिर आप पूरी तरह से बंधन मुक्त अनुभव करेंगे क्योंकि सच्चाई को कोई बांध नहीं सकता और सच्चाई के वायब्रेशन को कोई कभी भी कम नहीं कर सकता।

लखनऊ-उ.प्र.। माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राधा बहन।

चंडीगढ़। वी.पी. सिंह बदनौर,गवर्नर ऑफ पंजाब एंड एडमिनिस्ट्रेटर ऑफ चंडीगढ़ को रक्षासूत्र बांधते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उत्तरा दीदी।

डोंबिवली-मुम्बई। माननीय राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सकु दीदी।

रायपुर-छ.ग.। माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को रक्षासूत्र बांधते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सविता बहन।

अहमदनगर-महा.। राज्य सरकार के आदर्श गांव के कार्यकारी निदेशक पद्मश्री पुरस्कार विजेता पोपट राव पवार को उनके हिवरे बाज़ार स्थित निवास स्थान पर रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजेश्वरी बहन। इस मौके पर ब्र.कु. सुप्रभा तथा डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके उपस्थित रहे।

गुवाहाटी-असम। माननीय मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अल्पना बहन। साथ हैं ब्र.कु. मौसमी बहन।

मोहाली-पंजाब। के.पी.एस. राणा,स्पीकर,पंजाब विधान सभा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रेमलता दीदी,इंचार्ज,राजयोगा सेंटर्स,मोहाली-रोपड़ सर्कल।

ब्यावरा-म.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक रामचंद्र दांगी, भाजपा जिला अध्यक्ष दिलबर यादव, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, विश्व हिन्दु परिषद् अध्यक्ष डॉ. अशोक अग्रवाल तथा अन्य गणमान्य लोग।

भुज-कच्छ(गुज.)। मेयर घनश्याम भाई ठक्कर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रक्षा बहन।

फाज़िल्का-पंजाब। डिप्टी कमाण्डेंट बी.एस.एफ. सुरेन्द्र कुमार तथा जवानों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शालिनी बहन तथा फॉरेस्ट रेंज ऑफिसर सुभाष भाई।